हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

"मीठे बच्चे - अभी तुम्हें बेहद की पवित्रता को धारण करना है, बेहद की पवित्रता अर्थात् एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये"

Definition of..

प्रश्नः-बाप से वर्सा लेने के पहले का पुरुषार्थ और उसके बाद की स्थिति में क्या अन्तर होता है?

उत्तरः- जब तुम बाप से वर्सा लेते हो तो देह के सब सम्बन्धों को छोड़ एक बाप को याद करने का पुरुषार्थ करते हो और जब वर्सा मिल जाता है तो बाप को ही भूल जाते हो। अभी वर्सा लेना है इसलिए कोई से भी नया संबंध नहीं जोड़ना है। नहीं तो भूलने में मुसीबत होगी। सब कुछ भूल एक को याद करो तो वर्सा मिल जायेगा।

गीतः-यह वक्त जा रहा है..... Click

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप समझाते हैं - ज्ञानी और अज्ञानी किस-किस को कहा जाता है, यह सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो।

How Lucky & Great we all are...!

ज्ञान है पढ़ाई जिससे तुम जान गये हो कि हम आत्मा हैं, वह परमपिता परमात्मा है। तुम जब वहाँ से मधुबन आते हो तो पहले जरूर अपने को आत्मा समझते हो। हम जाते हैं अपने बाप के पास। बाबा, शिवबाबा को कहते हैं, शिवबाबा है प्रजापिता ब्रह्मा के तन में। वह भी बाबा हो गया। तुम घर से निकलते हो तो समझते हो हम बापदादा के पास जाते हैं। तुम चिट्ठी में भी लिखते हो "बापदादा" शिवबाबा, ब्रह्मा दादा। हम बाबा के पास जाते हैं। बाबा कल्प-कल्प हमसे मिलते हैं। बाबा हमको बेहद का वर्सा देते हैं, बेहद पवित्र बनाए। पवित्रता में हद और बेहद है। तुम पुरुषार्थ करते हो बेहद पवित्र सतोप्रधान बनने के लिए। नम्बरवार तो होते ही हैं। बेहद पवित्र अर्थात् सिवाए एक बेहद के बाप के और कोई की याद न आये। वह बाबा बहुत मीठा है। ऊंच ते ऊंच भगवान है और बेहद का बाप है। सभी का बाप है। तुम बच्चों ने ही पहचाना है। बेहद का बाप सदैव भारत में ही आते हैं। आकर बेहद का संन्यास कराते हैं। संन्यास भी मुख्य है ना, जिसको

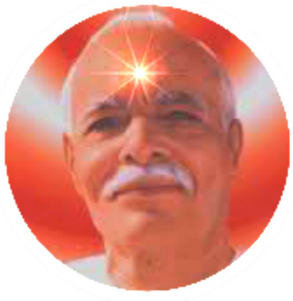

आपको खा जाऊ मीठे बाबा...

वैराग्य कहा जाता है। बाप सारी पुरानी छी-छी दुनिया से वैराग्य दिलाते हैं। बच्चे इनसे बुद्धि का योग हटा दो। इनका नाम ही है नर्क, दु:खधाम।

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

खुद भी कहते रहते हैं, कोई मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ, तो नर्क में था ना। अभी तुम समझते हो यह जो कहते हैं वह भी रांग है। बाप राइट बात बताते हैं, स्वर्गवासी बनने के लिए। अभी ही पुरुषार्थ करना होता है। स्वर्गवासी बनने लिए भी सिवाए बाप के और कोई पुरुषार्थ करा न सके। तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो - 21जन्मों के लिए स्वर्गवासी बनें। बनाने वाला है बाप। उनको कहा ही जाता है हेविनली गॉड फादर। खुद आकर कहते हैं बच्चों - हम पहले तुमको शान्तिधाम ले जाऊंगा। मालिक है ना। शान्तिधाम जाकर फिर आयेंगे सुखधाम में पार्ट बजाने। हम शान्तिधाम जायेंगे तो सब धर्म वाले शान्तिधाम जायेंगे। बुद्धि में यह सारा ड्रामा का चक्र रखना है। हम सब जायेंगे शान्तिधाम फिर हम ही पहले आकर बाप से वर्सा पाते हैं। जिससे वर्सा पाना होता है उनको याद जरूर करना है। बच्चे जानते हैं वर्सा मिल

Simple Logic...

Exclusive Authority of Shivbaba..

मेरे बाबा मुजे लेने आये है...

हो गई है शाम चलो लौट चले घर....

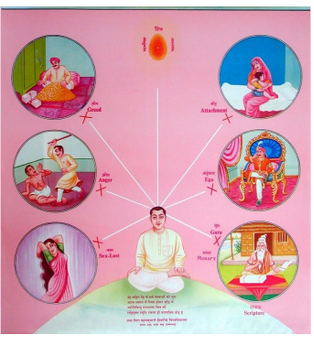

Point to be Noted

जायेगा तो फिर बाप की याद भूल जायेगी। वर्सा बहुत सहज रीति मिलता है। बाप सम्मुख कहते हैं - मीठे बच्चों, तुम्हारे जो भी देह के सम्बन्ध है, सब भूल जाओ। अभी कोई भी नया सम्बन्ध नहीं जोड़ना है। अगर कोई भी सम्बन्ध जोड़ेंगे तो फिर उनको भूलना पड़ेगा। समझो बच्चा वा बच्ची पैदा हुए तो वह भी मुसीबत हुई। एक्स्ट्रा याद बढ़ी ना। बाप कहते हैं सबको भूल एक को ही याद करना है। वही हमारा मात, पिता, टीचर गुरू आदि सब कुछ है, एक बाप के बच्चे हम भाई-बहन हैं। चाचा-मामा आदि का कोई सम्बन्ध नहीं। यह एक ही समय है जबकि भाई-बहन का सम्बन्ध ही रहता है। ब्रह्मा के बच्चे शिवबाबा के बच्चे भी हैं तो पोत्रे-पोत्रियां भी हैं। यह तो पक्का बुद्धि में याद आता है ना। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। स्वदर्शन चक्रधारी तुम बच्चे चलते-फिरते बनते हो।

तुम बच्चे इस समय चैतन्य लाइट हाउस हो, तुम्हारी एक आंख में मुक्तिधाम, दूसरी आंख में जीवनमुक्तिधाम है। वह लाइट हाउस जड़ होते,

तुम हो चैतन्य। तुम्हें ज्ञान का नेत्र मिला है। तुम ज्ञानवान बन सबको रास्ता दिखाते हो। बाप भी तुम्हें पढ़ा रहे हैं। तुम जानते हो - यह दु:खधाम है। हम अभी संगम पर है। बाकी सारी दुनिया कलियुग में है। संगम पर बाप बच्चों के साथ बैठ बात करते हैं और बच्चे ही यहाँ आते हैं। कोई-कोई लिखते हैं बाबा फलाने को ले आवें? अच्छा है गुण उठायेगा, शायद तीर लग जाए। तो बाबा को भी रहम पड़ता है, हो सकता है कल्याण हो जाए। तुम बच्चे जानते हो यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। इस समय ही तुम पुरुषोत्तम बनते हो। कलियुग में सब हैं कनिष्ट पुरुष, जो उत्तम पुरुष लक्ष्मी-नारायण को नमन करते हैं। सतयुग में कोई भी किसको नमन नहीं करते हैं। यहाँ की यह सब बातें वहाँ होती नहीं। यह भी बाप समझाते हैं - अच्छी रीति बाप की याद में रह सर्विस करेंगे तो आगे चल तुमको साक्षात्कार भी होते रहेंगे। तुम कोई की भी भक्ति आदि नहीं करते हो। तुमको बाप सिर्फ पढ़ाते हैं। घर बैठे आपेही साक्षात्कार आदि होते रहते हैं। बहुतों को ब्रह्मा का साक्षात्कार होता है, उनके

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥
जो-जो सकाम भक्त जिस-जिस देवताके स्वरूपको श्रद्धासे पूजना चाहता है, उस-उस भक्तकी श्रद्धाको मैं उसी देवताके प्रति स्थिर करता हूँ॥ २१॥
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥
वह पुरुष उस श्रद्धासे युक्त होकर उस देवताका पूजन करता है और उस देवतासे मेरे द्वारा ही विधान किये हुए उन इच्छित भोगोंको निःसन्देह प्राप्त करता है॥ २२॥ The ultimate source
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि॥
* अध्याय ७ * १०५
समझा?
परन्तु उन अल्प बुद्धिवालोंका वह फल नाशवान् है तथा वे देवताओंको पूजनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त चाहे जैसे ही भजें, अन्तमें वे मुझको ही प्राप्त होते हैं॥ २३॥

साक्षात्कार के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं करते। बेहद का बाप इन द्वारा साक्षात्कार कराते हैं। भक्ति मार्ग में जो जिसमें जैसी भावना रखते हैं, उसका साक्षात्कार होता है। अभी तुम्हारी भावना सबसे ऊंच ते ऊंच बाप में है। तो बिगर मेहनत बाप साक्षात्कार कराते रहते हैं। शुरू में कितना ध्यान में जाते थे, आपेही आपस में बैठ ध्यान में चले जाते थे। कोई भक्ति थोड़ेही की। बच्चे कभी भक्ति करते हैं क्या? जैसे एक खेल हो गया था, चलो बैकुण्ठ चलें। एक-दो को देखते चले जाते थे, जो कुछ भी पास्ट हुआ वह फिर रिपीट करेंगे। तुम जानते हो हम ही इस धर्म के थे। सतयुग में पहले-पहले यह धर्म है, इनमें बहुत सुख है। फिर धीरे-धीरे कलायें कम होती जाती हैं। जो सुख नये मकान में होता है वह पुराने में नहीं। थोड़े समय के बाद वह भभका कम हो जाता है। स्वर्ग और नर्क में तो बहुत फर्क है ना। कहाँ स्वर्ग, कहाँ यह नर्क! तुम खुशी में रहते हो, यह भी जानते हो बाप की याद भी पक्की ठहरेगी। हम आत्मा हैं - यही भूल जाते हैं तो फिर देह-अभिमान में आ जाते हैं। यहाँ बैठे हो तो भी

Note it Down

कोशिश करके अपने को आत्मा निश्चय करो। तो बाप की याद भी रहेगी। देह में आने से फिर देह के सब सम्बन्ध याद आयेंगे। यह एक लॉ है। तुम गाते भी हो मेरा तो एक दूसरा न कोई। बाबा हम बलिहार जायेंगे। वह अभी समय है, एक को ही याद करना है। आंखों से भल किसको भी देखो, घूमो फिरो सिर्फ आत्मा को बाप को याद करना है। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है। परन्तु हाथों से काम करते, दिल बाप की याद में रहे, आत्मा को अपने माशूक को ही याद करना है। कोई की किसी सखी से प्रीत हो जाती है तो फिर उनकी याद ठहर जाती है। फिर वह रग टूटने में बड़ी मुश्किलात होती है। पूछते हैं बाबा यह क्या है! अरे, तुम नाम-रूप में क्यों फँसते हो। एक तो तुम देह-अभिमानी बनते हो और दूसरा फिर तुम्हारा कोई पास्ट का हिसाब-किताब है, वह धोखा देता है। बाप कहते हैं इन आंखों से जो कुछ देखते हो उनमें बुद्धि न जाये। तुम्हारी बुद्धि में यह रहे कि हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं। ऐसे बहुत बच्चे हैं जो यहाँ बैठे भी बाप को कभी याद नहीं करते। कई

तो यहाँ बैठे भी याद में नहीं रह सकते हैं। तो अपने को देखना चाहिए - हमने कितना शिवबाबा को याद किया? नहीं तो चार्ट में रोला पड़ जायेगा।

भगवान कहते हैं - मीठे बच्चों, मुझे याद करो। अपने पास नोट करो, जब चाहे याद में बैठ जाओ। खाना खाकर चक्र लगाए 10-15 मिनट आकर बैठ जाओ याद में क्योंकि यहाँ कोई गोरखधन्धा तो है नहीं। फिर भी जो काम-काज छोड़कर आये हो वह कोई-कोई की बुद्धि में आता रहता है। बड़ी जबरदस्त मंजिल है, तब बाबा कहते हैं अपनी जांच करो। यह तुम्हारा मोस्ट वैल्युबुल टाइम है। भक्ति मार्ग में तुमने कितना टाइम वेस्ट किया है। दिन-प्रतिदिन गिरते ही रहते हो। श्रीकृष्ण का दीदार हुआ, बहुत खुशी हो जाती है। मिलता तो कुछ भी नहीं। बाप का वर्सा तो एक ही बार मिलता है, अब बाप कहते हैं मेरी याद में रहो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप मिट जाएं। स्वर्ग का पासपोर्ट उन्हीं बच्चों को मिलता है जो याद में

रह अपने विकर्मों को विनाश कर कर्मातीत अवस्था को पाते हैं। नहीं तो बहुत सज़ा खानी पड़ती है। बाबा और भी राय देते हैं अपने ताज व तख्त का फोटो अपने पॉकेट में रख दो तो याद रहेगी। इनसे हम यह बनते हैं। जितना देखेंगे उतना याद करेंगे। फिर उसमें ही मोह लग जायेगा। हम यह बन रहे हैं - नर से नारायण, चित्र देखकर खुशी होगी। शिवबाबा याद आयेगा। यह सब पुरुषार्थ की युक्तियां हैं। कोई से भी तुम पूछो सत्य नारायण की कथा सुनने से क्या होता है? हमारा बाबा हमको सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं। कैसे 84 जन्म लिये हैं, वह भी हिसाब तो चाहिए ना। सब तो 84 जन्म नहीं लेंगे। दुनिया को तो कुछ भी पता नहीं है। ऐसे ही मुख से सिर्फ कह देते हैं - इसको कहा जाता है थ्योरीटिकल। यह है तुम्हारा प्रैक्टिकल। अभी जो हो रहा है उनके फिर भक्ति मार्ग में पुस्तक आदि बनेंगे। तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनकर विष्णुपुरी में आते हो। यह है नई बात। रावण राज्य झूठ खण्ड, फिर सचखण्ड रामराज्य होगा। चित्रों में बड़ा क्लीयर है। अभी इस पुरानी

father of Atomic bomb → Click

Click

श्रीभगवानुवाच
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो-
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥
श्रीभगवान् बोले—मैं लोकोंका नाश करनेवाला बढ़ा हुआ महाकाल हूँ। इस समय इन लोकोंको नष्ट करनेके लिये प्रवृत्त हुआ हूँ। इसलिये जो प्रतिपक्षियोंकी सेनामें स्थित योद्धा लोग हैं वे सब तेरे बिना भी नहीं रहेंगे अर्थात् तेरे युद्ध न करनेपर भी इन सबका नाश हो जायगा॥ ३२॥ Adhyay-11

दुनिया का अन्त है, 5 हज़ार वर्ष पहले भी विनाश हुआ था। साइंसदान जो भी हैं उन्हों को ख्याल में आता है कि हमको कोई प्रेरक है, जो हम यह सब करते रहते हैं। समझते भी हैं हम यह करेंगे तो इनसे सब खत्म हो जायेंगे। परन्तु परवश हैं, डर लगा हुआ है। समझते हैं घर बैठे एक बाम छोड़ेंगे तो खत्म कर देंगे। एरोप्लैन, पेट्रोल आदि की भी दरकार नहीं रहेगी। विनाश तो जरूर होना ही है। नई दुनिया सतयुग था, क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले स्वर्ग था फिर अब स्वर्ग की स्थापना हो रही है। आगे चल समझेंगे - तुम जानते हो स्थापना जरूर होनी है। इसमें तो पाई का भी संशय नहीं।

m.m.m. Imp.

यह ड्रामा चलता रहता है कल्प पहले मुआफिक। ड्रामा जरूर पुरुषार्थ करायेगा। ऐसे भी नहीं, जो ड्रामा में होगा सो होगा.....। पूछते हैं पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी? पुरुषार्थ बड़ा क्योंकि पुरुषार्थ की ही प्रालब्ध बनेगी। पुरुषार्थ बिगर कभी कोई रह न सके। तुम पुरुषार्थ कर रहे हो ना। कहाँ-कहाँ से

बच्चे आते हैं, पुरुषार्थ करते हैं। कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। अरे, शिवबाबा तुमको कहते हैं मुझे याद करो, किसको कहा? मुझ आत्मा को कहा। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। शिवबाबा ही पतित-पावन है, यह Brahma आत्मा भी उनसे सुनती है। तुम बच्चों को यह पक्का निश्चय रहना चाहिए कि बेहद का बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। वह है ऊंच ते ऊंच, प्यारे ते प्यारा बाप। भक्तिमार्ग में उनको ही याद करते थे, गाते भी हैं तुम्हारी गति-मति न्यारी। तो जरूर मत दी थी। अब तुम्हारी बुद्धि में है - इतने सब मनुष्य मात्र वापिस घर जायेंगे। विचार करो कितनी आत्मायें हैं, सबका सिजरा है। सब आत्मायें फिर नम्बरवार जाकर बैठेंगी। क्लास ट्रांसफर होता है तो नम्बरवार बैठती हैं ना। तुम भी नम्बरवार जाते हो। छोटी बिन्दी (आत्मा) नम्बरवार जाकर बैठेगी फिर नम्बरवार आयेगी पार्ट में। यह है रूद्र माला। बाप कहते हैं इतने करोड़ आत्माओं की मेरी माला है। ऊपर में मैं फूल हूँ फिर पार्ट बजाने के लिए सब यहाँ ही आये हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। कहा भी जाता है

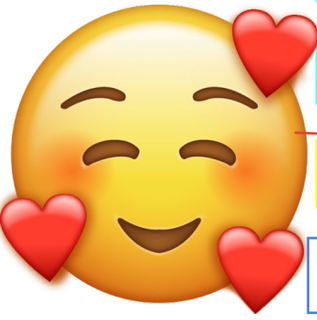

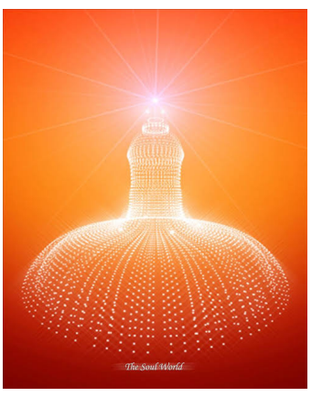

बना बनाया ड्रामा है। कैसे यह ड्रामा चलता है सो तुम जानते हो। सबको यही बताओ कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे फिर तुम चले जायेंगे। यह मेहनत है। सबको रास्ता बताना है, तुम्हारा फ़र्ज है। तुम कोई देहधारी में नहीं फँसाते हो। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जायेंगे। बाप डायरेक्शन देते हैं सो तो करना पड़ेगा। पूछने की क्या बात। कैसे भी करके याद जरूर करो, इसमें बाबा क्या कृपा करेंगे। याद तुमको करना है, वर्सा तुमको लेना है। बाप स्वर्ग का रचयिता है तो जरूर स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। अभी तुम जानते हो यह झाड़ पुराना हो गया है इसलिए इस पुरानी दुनिया से वैराग्य है। इनको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। वह हठयोगियों का है हद का वैराग्य। वह बेहद का वैराग्य सिखला न सकें। बेहद के वैराग्य वाले फिर हद का कैसे सिखलायेंगे। अब बाप कहते हैं सिकीलधे बच्चे, तुम भी कहते हो कितना सिकीलधा बाप है। 63 जन्म बाप को याद किया है, बस हमारा तो एक बाप दूसरा न कोई। अच्छा।

मीठे बाबा हम बच्चों के लिए कितना पुरुषार्थ करते है...

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि॥
हे अर्जुन! मुझे इन तीनों लोकोंमें न तो कुछ कर्तव्य है और न कोई भी प्राप्त करनेयोग्य वस्तु अप्राप्त है, तो भी मैं कर्ममें ही बरतता हूँ॥ २२॥
यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥
क्योंकि हे पार्थ! यदि कदाचित् मैं सावधान होकर कर्मोंमें न बरतूँ तो बड़ी हानि हो जाय; क्योंकि मनुष्य सब प्रकारसे मेरे ही मार्गका अनुसरण करते हैं॥ २३॥ अध्याय-3

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) स्वर्ग में जाने का पासपोर्ट लेने के लिए बाप की याद से अपने विकर्मों को विनाश कर कर्मातीत अवस्था बनानी है। सज़ाओं से बचने का पुरुषार्थ करना है।

2) ज्ञानवान बन सबको रास्ता बताना है, चैतन्य लाइट हाउस बनना है। एक आंख में शान्तिधाम, दूसरी आंख में सुखधाम रहे। इस दु:खधाम को भूल जाना है।

Points: ज्ञान

वरदान:-हर आत्मा को ऊंच उठाने की भावना से रिगार्ड देने वाले शुभचिंतक भव

Definition of..

हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात् ऊंच उठाने की वा आगे बढ़ाने की भावना रखना अर्थात् शुभ चिंतक बनना।

अपनी शुभ वृत्ति से, शुभ चिंतक स्थिति से अन्य के अवगुण को भी परिवर्तन करना, किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को अपनी कमजोरी समझ वर्णन करने के बजाए वा फैलाने के बजाए समाना और परिवर्तन करना यह है रिगार्ड।

Definition of..

बड़ी बात को छोटा बनाना, दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना, उनके संग के रंग में नहीं आना, सदा उन्हें भी उमंग उत्साह में लाना - यह है रिगार्ड।

ऐसे रिगार्ड देने वाले ही शुभचिंतक हैं।

स्लोगन:- त्याग का भाग्य समाप्त करने वाला पुराना स्वभाव-संस्कार है, इसलिए इसका भी त्याग करो।

अव्यक्त इशारे- आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, अन्तर्मुखी बनो

जैसे ब्रह्मा बाप एकान्तप्रिय होने के कारण सदा अन्तर्मुखी रहे, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ... यह पाठ पक्का किया,

जिस कारण वे स्वयं भी सदा शान्ति और सुख के सागर में समाये रहे और अन्य आत्माओं को भी अपने शुद्ध संकल्प और वायब्रेशन द्वारा, वृत्ति और बोल द्वारा, सम्पर्क द्वारा शान्ति की वा सुख की अनुभूति कराते रहे,

ऐसे फालो फादर करो।

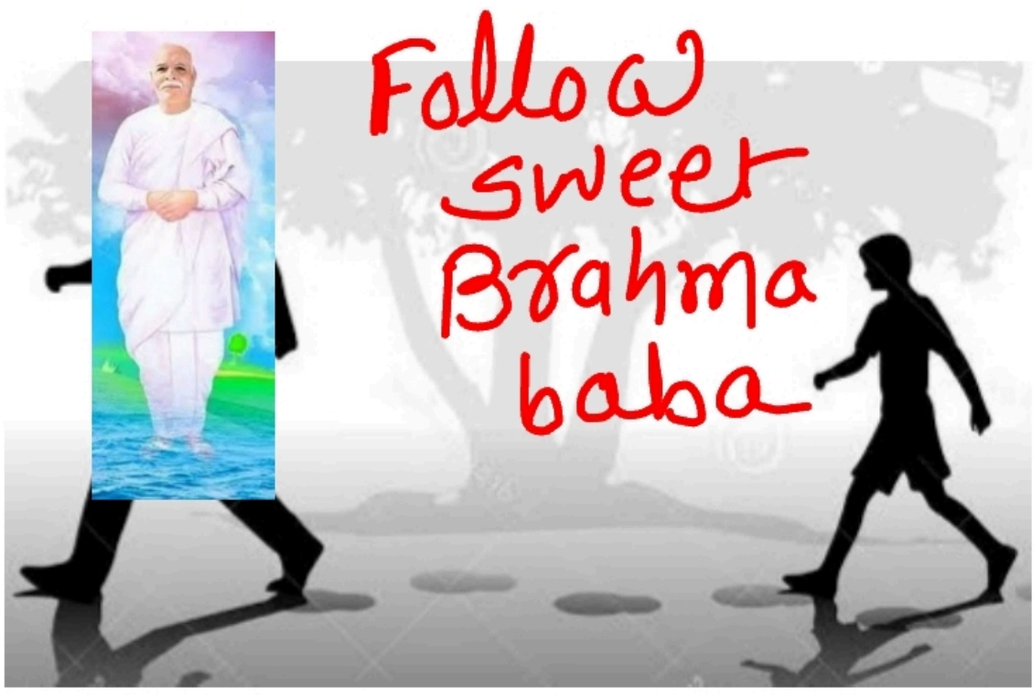

"फाइनल पेपर" book से प्राण प्यारे अव्यक्त बापदादा के महावाक्य जो यहां रखते हैं, वो नये महावाक्य हर तीसरे दिन पर रखते है, जिसका उद्देश्य ये है की आज के जो महावाक्य यहां रखे गए हैं उसको कल और परसों रिवाइज कर सके। जिससे कि वह महावाक्य हमारे अंदर तक उतर जाए।

नहीं तो क्या होता है कि हर रोज नए महावाक्य आते हैं तो आगे के महावाक्य जैसे कि बुद्धि से मिट से जाते है। इसलिए हम एक ही महावाक्य को तीन दिन तक revise करेंगे। जिससे कि वो महावाक्य हमारे अंतर मन मे उतर जाएंगे।

साथ ही इसी महावाक्य का video की लिंक भी रखेंगे जिससे कि चलते फिरते, काम करते, ऑफिस आते-जाते कभी भी सुन कर revise कर सकेंगे।

Revision is the key to Remember/inculcation...

आप भी महसूस करेंगे कि आज के वही महावाक्य , दूसरे - तीसरे दिन के revision पर उसका अति गूढ़ अर्थ (यथा शक्ति पुरुषार्थ प्रमाण) आपके सामने प्रगट होगा।। इसी को मीठे प्यारे बापदादा ज्ञान का मनन-मंथन व ज्ञान की गहराई में जाना कहते है।

फाइनल पेपर

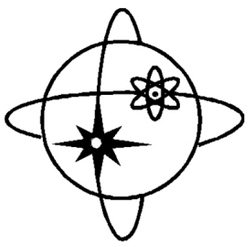

08-06-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 15-11-05 मधुबन

तो किया है, अच्छा है मुबारक हो लेकिन क्या है, वायदे का फायदा नहीं उठाते हो। वायदा बहुत जल्दी कर लेते हो लेकिन फायदा उठाने के लिए रोज़ एक तो रियलाइजेशन दूसरा रिवाइज करो, वायदे को रोज़ रिवाइज करो क्या वायदा किया? अमृतवेले मिलने के बाद वायदा और फायदा दोनों के बैलेन्स का चार्ट बनाओ। वायदा क्या किया? और फायदा क्या उठा रहे हैं? रियलाइज़ करो, रिवाइज करो, बैलेन्स हो जायेगा तो ठीक हो जायेगा। बापदादा को पता है मीटिंग वालों ने वायदा किया है।

m.Imp.

Point to be Noted

Importance of Revision

जिस प्रकार बिना मथे दूध में छिपा माखन नहीं मिल सकता उसी प्रकार हमें इन महा वाक्यों को revise करके उसकी गहराई तक जाना पड़ेगा तभी माखन व सच्चे रत्न प्राप्त होंगे।

यहाँ पर रखे गए महावाक्यों का वीडियो, Revision के लिए ====> **Click**

31

m.Imp

फरिश्तों का स्वरूप क्या होता है? लाइट। देखने वाले भी ऐसे अनुभव करेंगे कि यह लाइट के वस्त्रधारी हैं, लाइट ही इन्हों का ताज है, लाइट ही वस्त्र हैं, लाइट ही इन्हों का श्रृंगार है। जहाँ भी देखेंगे तो लाइट ही देखेंगे। मस्तक के ऊपर देखेंगे तो लाइट का क्राउन दिखाई पड़ेगा। नैनों में भी लाइट की किरणें निकलती हुई दिखाई देंगी। तो ऐसा रूप सामने दिखाई पड़ता है? क्योंकि माइट रूप अर्थात् शक्ति रूप का जो पार्ट चलता है वह प्रसिद्ध किससे होगा? लाइट रूप से कोई भी सामने आये तो एक सेकेण्ड में अशरीरी बन जाये-वह लाइट रूप से ही होगा। ऐसा

Coming Soon...

चलता-फिरता लाइट-हाऊस हो जावेंगे जो किसी को भी यह शरीर दिखाई नहीं पड़ेगा। विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिये लाइट-हाऊस होना पड़े, चलते-फिरते अपना यह रूप अनुभव होना चाहिए। यह प्रैक्टिस करनी है। शरीर बिल्कुल भूल जाय। अगर कोई काम भी करना है, चलना है, बात करनी है, वह भी निमित्त आकारी लाइट का रूप धारण करना है। जैसे पार्ट बजाने समय चोला धारण करते हो, कार्य समाप्त हुआ चोला उतारा। एक सेकेण्ड में धारण करेंगे, एक सेकेण्ड में न्यारे हो जावेंगे। जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जावेगी, फिर यह कर्मभोग समाप्त होगा। जैसे इन्जेक्शन लगा कर दर्द को खत्म कर देते हैं। हठयोगी तो शरीर से न्यारा करने का अभ्यास कराते हैं। ऐसे ही यह स्मृति-स्वरूप का इंजेक्शन लगाकर और देह की स्मृति से

Most imp. Point to ponder deeply

गायब हो जायें। स्वयं भी अपने को लाइट रूप अनुभव करो तो दूसरे भी वही अनुभव करेंगे। अन्तिम सर्विस, अंतिम स्वरूप यही है। इससे सारे कारोबार भी लाइट अर्थात् हल्के होंगे। जो कहावत है ना-पहाड भी राई बन जाती है। ऐसे कोई भी कार्य लाइट रूप बनने से हल्का हो जावेगा, बुद्धि लगाने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। हल्के काम में बुद्धि नहीं लगानी पड़ती है। तो इसी लाइट-स्वरूप की स्थिति में, जो मास्टर जानी-जाननहार वा मास्टर त्रिकालदर्शी के लक्षण हैं, वह आ जाते हैं। करें या न करें-यह भी सोचना नहीं पड़ेगा। बुद्धि में वही संकल्प होगा जो यथार्थ करना है। उसी अवस्था के बीच कोई भी कर्मभोग की भासना नहीं रहेगी। जैसे इंजेक्शन के नशे में बोलते हैं, हिलते हैं, सभी कुछ करते भी स्मृति नहीं रहती है। कर रहे हैं - यह स्मृति नहीं रहती है, स्वत: ही होता रहता है। वैसे कर्मभोग व कर्म किसी भी प्रकार का चलता रहेगा लेकिन स्मृति नहीं रहेगी। वह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा। ऐसी स्टेज को ही अंतिम स्टेज कहा जाता है। ऐसा अभ्यास होना है। यह स्टेज कितना समीप है? बिल्कुल सम्मुख तक पहुंच गये हैं?

m Imp.

समजा?

Coming Soon...

11/6/25

(22.11.1972)